

## अनुक्रम / INDEX

## लेख / ARTICLES

गोलपुष्ट के लिए महावीर - फेरू सूत्र और विदेशों में उनकी झलक	03
□ राधाचरण गुप्त, झांसी	
कषाय का वैज्ञानिक पक्ष,	11
□ संगीता मेहता, इन्दौर	
आचारांग सूत्र का संदेश	17
□ दुलीचन्द जैन, चेन्नई	
सामाजिक और आर्थिक सन्दर्भ में भगवान महावीर	18
□ रश्मि जैन एवं गोकुलचन्द्र जैन, इन्दौर	
सिन्धु घाटी सभ्यता : एक मूक विरासत	33
□ स्नेहानी जैन, सागर	
Lord Mahāvira - The Greatest Ecologist	41
□ Anil Jain, Surat	
Uniqueness of Astronomical Principles in Jaina Texts	47
□ Shrenik Bandi & Anupam Jain, Indore	
Colour : A Comparative Study in Jaina Perspective	66
□ Muni Mahendra Kumar & Narayan Lal Kachhara, Udaipur	
Science Behind Truthful Speech	71
□ Samani Aagam Prajna, Ladnun	

## टिप्पणी / Notes

धर्म ध्यान, अध्यात्म और विज्ञान	77
□ नारायण लाल कछारा, उदयपुर	
छ: आवश्यक	88
□ सूरजमल जैन, कोटा	

## परिचय / Introduction

श्री दि. जैन सह्याचल (विजयन्तीगिरि, सिद्ध क्षेत्र)	88
□ मुनि मार्दव सागर, इन्दौर	

## ज्ञानपीठ के प्रांगण से

शु. जिनेन्द्रवर्णी स्मृति व्याख्यान, इन्दौर, 18.01.14	
□ अनुपम जैन, इन्दौर	
'पांडुलिपियों का सुरक्षात्मक संरक्षण' कार्यशाला, इन्दौर, 10-14 मार्च 2014	
□ अनुपम जैन, इन्दौर	

## हमारे लेखक / Our Contributors

## अर्हत वचन

## ARHAT VACANA

वर्ष - 26, अंक - 1-2  
Vol. - 26, Issue - 1 - 2

जनवरी-जून 2014  
January - June 2014



कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ का बाह्य दृश्य



कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर  
KUNDAKUNDA JÑĀNAPĪṬHA, INDORE

## अर्हत् वचन पुरस्कार वर्ष 25 (2013) की घोषणा

कुंदकुंद ज्ञानपीठ, इंदौर द्वारा मौलिक एवं शोधपूर्ण आलेखों के सृजन को प्रोत्साहन देने एवं शोधार्थियों के श्रम को सम्मानित करने के उद्देश्य से वर्ष 1990 में अर्हत् वचन पुरस्कारों की स्थापना की गई। इसके अंतर्गत प्रतिवर्ष अर्हत् वचन में एक वर्ष में प्रकाशित आलेखों के मूल्यांकन हेतु एक निर्णायक मंडल का गठन किया जाता है।

इस वर्ष (2013) प्रो. एस. के. बंडी, डॉ. मन्मथ पाटनी एवं श्री सूरजमल बोबरा के त्रिसदस्यीय निर्णायक मण्डल द्वारा निम्नांकित आलेखों को क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार हेतु चुना गया है। ज्ञातव्य है कि पूज्य मुनिराजों / आर्यिका माताओं, अर्हत् वचन के सम्पादक तथा सम्पादक मंडल के सदस्यों एवं विगत पांच वर्षों में इस पुरस्कार से सम्मानित लेखकों द्वारा लिखित लेख प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किये जाते हैं। पुरस्कृत लेख के लेखकों को क्रमशः रुपये 5000/-, 3000/- एवं 2000/- की नगद राशि, प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह से सम्मानित किया जावेगा।

- प्रथम पुरस्कार - गणोकार महामंत्र : माहात्म्य एवं वैज्ञानिक अनुचिन्तन, 25 (1)  
डॉ. अजितकुमार जैन, विदिशा
- द्वितीय पुरस्कार - जैन धर्म का चिकित्सा वैज्ञानिक वैशिष्ट्य, 25 (2-3)  
आचार्य राजकुमार जैन, इटारसी
- तृतीय पुरस्कार - Spirituality and work place spirituality : A pragmatic view with reflections on Jaina Scriptures, 25 (4)  
Dr. Pooja Jain, Indore

पुरस्कार समर्पण समारोह शीघ्र आयोजित किया जायेगा। जिसकी सूचना पृथक् से यथा समय दी जायेगी। वर्ष 2014 में भी यह योजना गतिमान है। वर्ष 2014 के 4 अंक प्रकाशित होने के बाद उनके लिए निर्णायक मंडल का गठन किया जायेगा। आगामी वर्षों में भी योजना जारी रहेगी।

डॉ. अजितकुमारसिंह कासलीवाल  
प्रकाशक

डॉ. अनुपम जैन  
संपादक

### ABSTRACT

*Logical value, ethical value and aesthetic value comprise the holistic system of value in this world. Logical value establishes the truth or falsity of the statement. Aesthetics leads to beautifulness or ugliness of the subject while ethics focuses on to the goodness or badness of the conduct. In ethics that conduct becomes virtuous which is done by goodwill & which produces good results. On that bases, non-violence, honesty, truth, love, compassion, charity, etc. are considered as ethical values. Truth is one of them. In this paper my main objective is not just to prove ethical goodness of truthful speech but also to show why speaking truth has equal scientific importance.*

As we all know that speech is the medium or vehicle for our communication. Without speech communication is lame because it furnishes the most important means to express one's thoughts and ideas to others. There is no better way to present oneself other than speech.

In Jaina philosophy speech is basically divided into four types. In Tḥāṇaṃ<sup>1</sup> Lord Mahāvīra says :

*cattāri bhāsājātā paṇṇattā, taṃ jahā-  
saccamegaṃ bhāsajjāyaṃ, biyaṃ mosāṃ,  
taiyaṃ saccamosāṃ, cautthāṃ asseccamosāṃ ||*

i.e. there are four types of speech, viz. truthful speech, false speech, mixed speech (i.e. truth cum untruth) and conventional speech. From these four-truthful and conventional speeches are to be spoken. Rest of the two are to be avoided. From among the former two, speaking truth is preferable. Emphasizing the importance of truth, Manu says, "One who pollutes his speech by saying an untruth is like one who steals from his own wealth."<sup>2</sup>

Before going to the ethical importance of truthful speech, we should first understand the meaning of truth. The term 'truth' or 'satya' has got varied implications. It is derived from 'sar', which is generally taken in the sense of ultimate reality (i.e.) in the metaphysical sense. On the other hand, 'satya' derived from 'sar' has taken a strong position in the ethical concern also. Etymologically, it is defined as "Sadbhṛyo hitam satyaṃ"<sup>3</sup> that is, that which is beneficial to all

\* Assistant Prof., Dept. of Jainology Comparative Religion & Philosophy Jain Vishva Bharati Institute (University), Ladnun 341306 Email : prajna108@gmail.com